International Journal of Arts & Education Research

आचार्य रजनीश के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों की आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

संजीव कुमार*[1], राजेश कुमार[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर, साई नाथ विश्वविद्यालय रांची, झारखंड ।

प्रस्तावनाः

आचार्य रजनीश (1931-1990) अपने समय के क्रान्तिकारी विचारकों में से थे। जीवन को उनकी समग्रता में जानने, जीने और प्रयोग करने के वे जीवन्त प्रतीक थे। जो पूर्व के अध्यात्म एवं पश्चिम के विज्ञान के समन्वय में विश्वास रखते थे। आचार्य रजनीश अद्वितीय शक्तिशली है एवं मुख्य रूप से उनका क्षेत्र, धर्म दर्शन और आध्यात्म है। आचार्य रजनीश के विचार रजनीश फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित लगभग 700 पुस्तकों तथा 5000 ध्वनिमुद्रित प्रवचनों के रूप में उपलब्ध हैं। प्रत्येक शिक्षा दार्शनिक का शिक्षा दर्शन उसके सामान्य दर्शन पर आधारित होता है। शिक्षा कला शिक्षा दर्शन के लक्ष्य को कार्यरूप में परिणित करने का माध्यम है। आज का युग संकट की घड़ी से गुजर रहा है। मानव सभ्यता के इतिहास में आज एक ऐसा दौराहा सामने हैं, जहाँ एक ओर पर्यावरण-प्रदूषण, जनाधिक्य तथा एटमी युद्ध से किसी भी क्षण समस्त मानवता का विनाश हो सकता है तो दूसरी और वैज्ञानिक नवाचारों, तकनीकी उपलब्धियों और संचार क्रान्ति ने एक नयी विश्व-व्यवस्था एवं मानव के स्वर्णिम भविष्य की विपुल सम्भावनाएं प्रस्तुत कर दी है।

IJAER